

मांश्चयुति पुनः नो नरु म् ॥ दक्षिणतस्तु रास्यान् ॥ ५५ ॥
आसत १०० संयुतं वम ध्या प्रभो राग भवति ह ह सुता १००
इति मत्त दा प्रमह गते प्यो घटि का व काल ॥ ५६ ॥ विरय
१०० निष्प्राद ॥ रागतेष्य ना द्या न्न न ध्य प्रमदास मतं ५ संता १००
सिक्त १०० यमि ॥ दि न्न लला युला द्या भवति सिता भा ॥ ५७ ॥
तुत्तु र्यो द यत असा ध्य सो भी दरो सो दि ना युपा ता ह ॥ ५८ ॥

२६ भा. सेषवद्वा २० दिगुणां विभज्य भोजो दया प्राभवति इत्युक्तं ॥ लं
 प्रजो ह्यं रसभं विलग्नं यामित्रलमुनयो वदन्ति ॥ लं को द
 पूर्ववदेव साध्यां षष्ठा ६० विभज्येति यथा ॥ तं तं ॥ स्यात्प्रा
 पालेन न तस्य हिने यूक्तं प्रकूर्यादपरे कपाले ॥ न सुध्याते त
 वनतं प्रकूर्यात्तृषष्टिपुनस्तत्र न तं प्रसोध्यं ॥ लं को दयेस्तत्र
 पुनप्रसोध्यं विलग्नं प्रथमोक्तं भार्गव ॥ मध्ये विलग्नं रसभं प्रजो

आशुभा मारुति
 ASHA ARCHIVES

896

ज्य पातात संज्ञक धितो मुनिवै ॥ ॥ लं चतुर्थां च सुष कलत्रं
 कालत्र मध्यां च कभे विसो ध्या स्वभं विलग्नं च विसो ध्या सेषं
 ज्यं ३ संस्वकीं यं त्रमत प्रजो ज्यं ॥ ॥ प्रतिद्वयो योग दलरंस्तं रा मः
 धितु त्रस्थित स्यादफलो ग्रह स्या ॥ यज्ञस्यो निष्ठा २१ पल भार्गवितारण
 चलं कावधौ स्यादिह दक्षिणाक्षी स्यात् ॥ दिगुणां विषुवच्छ
 विभजे क्रमसत्रिधा अर्का ह षडने १२ ॥ ५३ इत्युक्त्वा वराव

२० एणविनाडिका २० वसुकेन नृश्विरदचिदाच ३२३ क्रमो क्रमा
 त्वरखणैः नितै यत्तविनाडो जातिको दयात् ॥ त्वत्तधृती
 १८०० खखै ८०० खखै ६०० खखै ३५० ख
 मेने २०० खखै १५० खखै ६० भाग गृह हो राइं ड्रा
 सप्तभाग नवांसक द्वादसांसक त्रिंसांसक इति ॥ विषमे विषम
 रासौ गृह प्रथम हो राक स्पष्टि तीया पांचं ॥ समे सम रासौ गृह

हृषिकेशो वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ पुष्पमेदं शुक्राणामुपदशसिद्धि
तीयदेष्टाणामेवमरासि ॥ त्रितीयदेष्टाणामेवमरासि ॥ वोज्येषु
तत्त्रेणो जेषु सप्तम्यादि क्रमात् ॥ मेषसिंहधनश्च वृषभेष्टास्तन
वासका ॥ दृषकचमकरोमराद्यास्तनवांसका मिथुनतुला कुंभश्च
गुलाद्यास्तनवासका ॥ कर्कटोदृष्टिकोमिन्नकर्कटानवांशका ॥
स्वग्रिहाद्वादशाभागा ॥ कृजपजमपजीवदृज ॥ सितापशुचंदि

२१
भा

प्रमौमो ह्यधिगू रूषो डसवधानिसौरस्यो कौडविसति गसप्रा दस ए बु
वप्रोक्ता केतु सप्तमुदाहृता तश्च कोवि शर० तथा प्रोक्ता दसवर्ष प्र
मानकम् ॥ ॥ अथ शत्रुमित्रिविवार ॥ सत्रुमंदसितौ समश्च ससियेभि
र्वा न्यसेषावौ ॥ ति क्षां अहिम रस्मिज स्य अह दो सेषा समा सित गु वरु
जीवे दु द्न कगा कुजस्य सुह दो जो रिसिता कि सनो ॥ भोम ॥ मित्रे सूर्य
सितै बु ध स्य हिम गु सत्रु सम श्या परे ॥ दुधा ॥ सुरे सो म्य सित्ता वरि रवि

सुते मध्ये परे तो था ॥ जीवा ॥ सौ म्य कि सुह दो समो कूजगुरु अ क्र से
षा अरि ॥ अक्र ॥ अक्र जो सुह दो समो सरगू रू सौर स्य चाने रया ॥ अ
नि ॥ ता त्वा पुद साय व बु सह जा स्वान्नेषु मित्र स्थिता १० ॥ ११ ॥ ४ ॥ ३ ॥ २ ॥ १ ॥ स
थ मूल त्रिकोणा षडनै धनै क रासि सप्तमगा १ ॥ २ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
क स्य यथा सप्या भवाते ता त् कालि कारिषा ॥ इति श्री सदानंद वार्य
पंचसिद्धांते सारे भास्वति कारो व द्वाधिकार पंचमो ध्यायः ॥ अथ

सत्राभिन्निकोष्टं कलिष्यते ॥ कोष्टकैः ॥ परिवोधव्यः ॥

[illegible]

हितसमरिपुसंज्ञयेनिसर्गेउक्ताचाधिहितःहितमाध्याःत्रिपितत्काल
मित्रैः॥रिपुसमशुद्धदाष्यासुतिकालेग्रहेडाअतिरिपुमाध्याश
त्रिभिचित्रनिघाशुभम्॥अथवज्रग्रहनाधिकारव्याख्यायतेमाह॥॥द्वि

द्विंशद्योगविपर्वकित्ता ४ युक्तादिमित १० सप्तमोऽष्टमश्चदिना क्रवाहं
 तमोऽष्टमश्चदिना क्रवाहं तमोऽष्टमश्चदिना क्रवाहं २०० भाष्यसौम्या याम्या
 सरोत्यप्यकृत्स्नहंसा सहित ॥ १ ॥ मानं हि मां स्वर्गतिरग्निः ३ हीनदिक १० रत्न
 द्यावत्तर्भिश्च ४ तमप्रभानं ॥ तयो गतो र्ध्वं २ सखज्जितचग्रासमुधासो
 स्फुटपर्वसंधौ ॥ २ ॥ अथोत्तरार्गं न ॥ स्वहा हंसासो १२ नितमर्कमान
 स्रज्जाति २२ भागो नितितं मीदुमानं त्रिघ्ने ३ दुभागा एव न २० द्वा नितितोर्क

भोग्याग्नि भागो न विवर्जितो भोगो ॥ ३ ॥ स्थि च दृ मंगा दृ हत मिदृष डा स्वपंच
 ५० युग वर विना दित च्छु हिनं धनं पर्वे निमित्त र स्मो स्प सो ये मुक्ति च्छु दिष्ट
 काल ॥ ४ ॥ ग्रहो न वि दृ दृ स सं गुणा च ष पंच ५० यु क व ह्रि फ
 लं वि म ह ॥ ही न ध तं प र्वे ति वं ड भा नो नि मि ल नो नि मि ल न के भ व मि
 ॥ ५ ॥ द्वि र द्वा द श से पि जा मि त्रे स म रा ति ग ते य वा ॥ त दा ष द्द का
 ष कं चे व ग्र ह नं व च्छु स र्व्यो ॥ ६ ॥ इति श्री पञ्च सिद्धां ने सारे भा
 ख तिक च द्द ग्र ह ना धि का र व द्वा मा ॥ ६ ॥ अथ ~~सर्व~~ स र्व्य ग्र ह ना धि

कारा न ता द स १० द्वा पि त २४ यु क न ता प्रं त लं व ने ते न तं यु तं वा त रं वा
 के २० नी घो न य त च्छु भा नो प्रा च्छा प्र ति च्छो च स र्प्र सा ध्यो ॥ ७ ॥ ए य क
 स ता १०० प्रा धि के ह द्द भ क्त त द क्षि यो गा त रित ति त स्या त ॥ त लं व ने रा न
 दि क गु णि ३ तं गु णा प्रं ही नं ध नै प्रा क प र य र व रं सो ॥ ८ ॥ त तः स तं स
 प्र य तं स र श्च स रा व ने तं न रा यु क स्फू ट स्या त मा नं वि भो ग्य र तां ग
 न डो २६ त द्वा ह को र्द सित मे व च द्वा ॥ ९ ॥ ग्रा स च्छु तु द्वा स वि तु र व

रामैश्वर्यासेकलखोस्थितिमर्दलीधं॥ इति हसूर्याग्रतरो विशेषस्तु
 चतुग्रहणादिदिन्य॥५॥ लनवनचापामृतेविधाग्राम्माध
 नपर्वतिप्रतिप्रभाना॥ स्थित्यर्थकिहानियुतप्रकस्यपरोयमुक्ति
 श्रुतदिप्रकरुने॥ इति श्रीपंचसिद्धांतसारभास्वतिकरणसूर्यग्र
 हनाधिकारसप्तमः॥१॥ खखेदुवेदाधि४१०० कभासकरस्यप्रक
 वत्भवका २२०० प्रदिसासरश्चःतत्तद ६० भागंम्याकृतिमुधोसो

यथादिसंख्यसूत्रमितखरांमो॥१॥ मध्यंदिनात्प्राक्परस्तुसौम्याया
 म्यानतस्यादधतकृतिञ्च॥ कृतिस्तुल्यात्पदिमोक्रोमाहरेखाव
 लनाग्रविंदो॥२॥ मानंमहादेश्वनतस्यपिपचमागोनदिक१०सेषरासः
 हतागुलाद्या॥ शर्कमानोगुलसगुणासाधकाग २०० भक्त्यावल
 नागुलानि॥३॥ चन्द्रार्कयादिसप्तमंलस्यसव्यापसवावलेनाग्र
 च॥ मध्यादुरकुदक्षिणतसएततसाधपूत्रेनएविंदषरे॥४॥ व

लनं प्राङ्मुखं देतदिदं पेकदा यदि॥ भेदे प्रत्यं मुखं देयं मिन्दोमानोमि
दोमानोमिपञ्चय॥ ५॥ वलनाग्रासुत्रं मध्यं विदुष्वेव सयेत॥ मध्यसु
त्रेन विदुषं वलनाभिमुखानये॥ ६॥ विधिर्वाग्रालिये हतं ग्राहका
श्रुततेन यत्तु ग्राह्यं हतं समाक्रान्तं तद्गुल्लतमसा भवेत्॥ ७॥ अ
थपरिलेखे सप्तमुक्तिः करणमाह॥ स्थित्यधनिष्ठैरदसवेद
भक्तैः प्राक्तं गुल्लेषो कपरयोस्तदग्रात्॥ पसोपमुक्तिश्चतुर्णा

अथपाननिर्मिलनोन्मिलनके भवन्ति॥ ८॥ ग्रासगुल्लं
प्रहृतं स्थित्यधनविभाजितलब्धदेगा गुल्लं ग्रासं स्वक्षग्रा तत्पु
सांनोभत॥ स्वस्वास्तिवेदादिगतपूगाद्यादिव्योक्तितमरव एव
रुषो नलिश्चत्तां सद्य न श्रुतिदमाह सरवति सकरया सनुजः
१०॥ श्रुतिश्रीसत्तानदावाप्यभास्वती करनेपरिलेखाधिक
रज्जुहृत्ससमाश्रु श्रीसाके ११ ईद श्रीसम्बत् १८०३ वैशाख

३. त्तिदि योर मायो न ते सला ई न मा रुः ते सै का गा ई को ठू ना माः ग ई
वि अ छा डो र ट व ते र्का गा ई को दु ड जो बा आ लाः ति स वै ला ई पि
शाना स हो ला र ॥ ती स वै म न न वा हा दे वि हा प्रो यू ति य सा का ठ
उ माः घर व ना ई व सै ला भ नि ॥ त्यो ला ईः गा ई को थु न मा ग ई वि
अ छा डो भं वा ने सै वि च माः अ न रु द्र पां दे ले था हा पा यो रः अ व या
हो व स्याः म र न हो ला भ नि ये क मा नु चि हु रा ये क ग कु वा द हि ३

४. त्ति क न दे स मा हि द दो भ यो ते सै वि च माः ज सू रं दा त्त भ न्यो को
प निः ते हि न ग्र मार हे द ॥ ते स ले अ न रु द्र पा डे तु ग्रा उ नू न स
क्या दे यिं मा रो लाः भ न्यो र व ठि या न भ न्या र ॥ त्यो भा दो य खा ना
जि रि कि दि यो ॥ न व स र्ता भ ज ता ग्यो हे म नु वा हे ॥ अ म्मा
सं न को ना स हु दा सरा प्र ग म्मा थ्या ॥ अ ज हा मो जे ये मा थि यो ४
६. त स अ र्थ मु ख्ये दे स मा पि ना स क सै ला ई ह वै रा ॥

५ टति गरि दै कैसे लाईः पिनास भै गया ॥ यो पछिलो कथा हा भुनाई दी
या दो हो लो ॥ दो हो लो ॥ दो हो लो ॥ होई जाता ॥ साहि ॥ अत रुड
जो दे १ वान गंगा नदि १ जसू चंदाल १ कामुना को वीत साहि १
दो हो लो भयो ॥ ३ ॥ इति सम्बत् १०८६ साल मिति धमा जसू दि १०
रो ज २५ म ॥ वाकिर ला को दूई ति र पयो ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५
क्या का हलने भा ग्यो म प नि ते सका पछि जा न्द भ योर गयो ॥ अत न

६ रुद्र पा दे ले प नि द हि चि उं रा हाः कामुना को वोट न नि रा यार ॥ वा
न गंगा न दि मा ॥ अछान न ग न ग ये छः त्यो द हि चि उं रा हा यो को
था उ मा जसू चंदाले पुगे छरः दे ओ छर आ न ज्पा टे छरः पोर ये रहे दी
सर्प सर्प नी व सि कुर ग या को सू यो र या ये छः थोरै वे र छः अ
न रु पा डे आ ये आ न ला ग्यः जसू चंदाल ले छे क्याः त्यो द हि चि उं रा
न आ भं न्दाः अत रुद्र पा दे ले क्य न ले छे कि स्र भं दा ते स द हि चि उं

७ माः सप सपानि वसिरे हे ह्ये सो आन्या वि जि कि कै म न्याः ह्य सरः हे
क्या को हो भनिः ज सू चंदाल ले वचन सनि ॥ अ न रु द पा डे ले न दा री
सली त ॥ ते सत्ता ह्य पानि मा ह्य भनि ॥ अ गे वा ल्यो र द हि ची हा को भा
दो ॥ अ गे मा हा ल्यो र न्यो भा दो ता न्यो ट न स प म न्न ता ग्योः म नू वा म
ता ई रा य ॥ यो भा दो या या मा डि ह्य मि क ॥ म के हि वी नी ग ह्य ॥ ती मी ७

ता ई वु ज रा उ न ह्य ते य न वि स्पी को दु ति र प या को ह्य ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥

८ उ न मो व दि का ये न म ॥ ज तो स ते ट तो वा दि ती ज तो र क्षि ती त तो हरिः ज
तो ह री त तो ध र्म ॥ ज तो ज येः ग न स ते ट ट अ न र क्षि ती रां वा स या ई व ॥
ग न र क्षि ती स्मे रा वा स या सः अ रा श्री क ह न नं वा स या ई व ॥ ग रा श्री
क ह स्मे नं वा स या सः अ रा ध र्म चो नि व ॥ ग रा ध र्म चो नः अ न ज
ये ज इ व ॥ थ थे ध र्म के ध र्म स्मे के डः दा ॥ ध र्म नं ल क्ष्मी या के डे
द ग मो दि र क्षि ती स्मे के डः न्याः घ थे ध र्म स्या त उ ति म ध न्या ॥ गु रि
दि ट वो मि गु लि दि तो स न ॥ थ थे ग थे ज न ध र्म कः ध र्म से न

लक्ष्मीया के दुन्या ॥ अबो ५ धर्म सङ्गुनः जिगा कसः गुत्रि द्विनम
नुसे जूया बो मिसा जादि जूया ३१ दे मखि चो ॥ हीला लख इति प ॥
उत्पेतरणे आनी वः वमभिगा पुलहे चित्त ई ३१ अदमभिगा व
पुये म हा व लख का आम हा वः शूल मसि स र्गा ई ३१ दे ला साम इः
सुत्रा साम दः अति स्वतः सध पति शूल सखिति था कः कु धातः
कु ५ त रा ये तो ज व स तुः अ रा कः म स रा कः अ म या क न रां जू को
सा क भिं क न ई ३१ ॥ था थिं गु था य स जि चा न म न्हा या ३१ जि म जो

सा था ये स हि थं हि थं को ति को ति परि मा रां द त हा सां त ३१ मि
म जु लः का क भा ज न ले स दुरा थः स्व स ल पा ३१ नि ३१ अ थं ध कं
लक्ष्मी रां धर्म या त क दु न अ ॥ इति प्रथम अध्याये ॥ धर्म लक्ष्मी स
वा दे प्रथम अध्याये ॥ १ ॥ पु न वार र क्षिमी या के दु न्याः गा थिं गु था
ये स छि रा वा स या ये ध कं ॥ धर्म से न र दू या के दु नाः था सर
क्षिमी धालः जिन वा स या ये गा थिं गु था ये स धाल सा ॥ मि सा उ
न जु या थ व पुरु स या के क व त म या क क ॥ म व या पुरु सः या

शालमसौ कः थ व पुरुष सरा रा सं तू स जु लः थ व पुरुष या क
क प त म या कः मे व या पुरुष या शालमसौ क ॥ स दा को ल व च
न भि न ग जु लः थ व पुरुष या त न्ना त ना न स तु ग जु ल ॥ को था
ला सा सं न्हा वः ल ला सा ह्नाः को था ला सा स तू ग ला सा न्हा वः
भं दू कु दू न या भि रा आ दि न भि रा जु ल हारा छ ल पो ल
न ये दो न्ने व स्र थ म म न रौ थ व पुरुष या न ले न क न ई वौ

व पु ये न्हा वो ल स का ये न्हा व स्र स ला ल या थ न्हा उा स्र ॥
सि न्हा ल नी ये न्हा व स्र थ थि रा था ये स रा ना जं स थि उा ज
थ जू ई उा श्री ती या गु थू ला व म नु स्र जू ई व थ व पुरुष न न्ना
त सा न म चा ल ॥ भ ग ति जु यु थ थि सु मि सा ज रा रा इ म द
कु त्र व नि दा रा या न सा न व मि जु ई व थ थि कं ला के म र्मे न
ध र्म या के इ ० ॥ ॥ इ ति ध र्म त्त वि म स वा दे ॥ दू ई स्र ॥ ॥ २ ॥

लमिउवाच॥ हरांसिद्धेमित्रधर्मकथापापपुन्यमाधकपाप
पुन्यविक्रमकन्येमातलधर्मलक्षितस्मरणाधर्मयाकेदुनाभो
धर्मसजिह्वाइन्ना॥ इह्यायानाधकंलक्षितस्मरणाधर्म
याकेदुना॥ धामधर्मस्मनेनग्रावपादयेकलभोरक्षितइ
हनेजिराकन्ये॥ गुलिधिरांसिसाजराजुयाउथधपुरु
अध्वोधस्वयापापरांरुसतिकदुबलिचालजूल॥ विका

येगस्वयापापरांरुसिनीजूलपुरुषयावचनमइनाया
पापरांरुसिजूल॥ पुरुषवरांपउतिउटिल्लारणापापरां
रुसिजूल॥ धवयानजुकराकभिमकनायापापरांध्रसा
हालसिचाजूल॥ धउपुरुषयावराधवयापुरुषराकैः
धवयापुरुषउअलपापापरांरुलेवलेभाजमदस्मेमा
हादुअसिस्मेसित॥ प्रतिपानापाचुकायापापनजनुजूल

थोने राध वी पुरु र्छया के विदूरा दुरा म दु भिरा क के हे ल पे
मा ल ॥ इति ति त्रि त्रा त्र्य ध्या ये ॥ रक्षि म स वा दे उ ॥ ३ ॥ हा रा ध
म र्मे रा र क्षि म या न क त्मा स ॥ भो ल क्षि म स ति रि जा ति जु या उ
ध र्म या ये म ले म सु क र्म या ये म * म सु थ व पुरु र्छ या के
धु का भ ग नी या रा रां सि वा जु ल ॥ हि इ पो ल त्रु रि या ना
रा या रां दे व जु पा जु ल ॥ थ व पुरु र्छ या म रा न ले ल रा

चो रा रा या रां ॥ उ पा स चो रा ध र्म द न पु र्मे ला क जु ल
थो न्ये परि मा रा या क स्म रि रा ज रा स्म मि म न्द्र धा ये ॥ थ
या पु न्ये रां था दे व क ले छि स्व र्ग वा स जु ई व ॥ थो न्ये रा मि
रा च्छा ल जु ई व ॥ ना रा ज्जा स ई व ॥ मी रा रा रा थू रा व ॥
म न्द्र जे जु या व ॥ थो न्ये रा थ व पुरु र्छ या के वि धू न्ये दुरा म
दू थो न्ये रा थ व पु र्छ या के सि वा या ये मा ल भि न्न क वे हे

लप्पेमा॥ इति चतुर्थेऽध्याये॥ रक्षिसंवादे व॥ ४॥ धर्म
स्येगाधाय भोरत्तक्षित दुहुन्मे मनुस्येगा पुर्वजर्मसथ
वो ह्माचमेले विवोथासन्नरं कारन्नादिराभिन्नक जुलन
का ववेलासन्नादिराभिमेलासथ व ह्माच मेले विवि व॥
वगजिदामकास्ये ह्माच जिला जरा दे नोता राका नो दे व
कलेहिस्वर्ग वासलाई वसा सुधि दारा यारा वृति पुरो ला

क॥ कत्मासस्त १०० गाका उति पुनेला का व ह्मासस्त १०० पु
जायारा उति पुरो ला क॥ जिलया के सुसनी याये मने को
काये मचामचाम द टले धिरा लहा हिंम रिर सा ले मा हि व
वगजिदामका लहा॥ अन्ने ग प्ररि कारणी स्ये वा यारा सारे
मा हि व॥ इति पंचम अध्याये॥ रक्षिसंवादे व॥ ५॥ इति पं
चम अध्याये रक्षिसंवादे॥ ५॥ हाणा धर्मस्मरा धातः मोहि धर्मस

कुरुन्मे जिशाकलेः पुनर्जर्मसया राणा पाप धुगुलिजर्मसकनि उ
सिजलवस्तु युया पापरां कोलिजुल ॥ नवस्तु युया पापरां धूया
गुल-कसवस्तु युया पापनं यायेजुलः कपासवस्तु युया पापरां
गुइ उ। चाकिणी जुलः देवनिन्द्यानाया पापनं सदा कालं रो गि
गुल ॥ सफलिवस्तु युपापरां अहोयेम फलै जेत जुल ॥ अरु
वस्तु युया पापरां दालिदू मो गिराजुल ॥ कुचा नानिया क काम

यानाया पापरां आपातिजुस्ये नाम मू स्ये सिटं ॥ मेव यावस्तु थापका
वो कया पापरां निसंनारण जुल ॥ प्रतिपाता पाचु काया पापरां जंनुज
ल ॥ वहि वस्तु युया पापरां विराहिराकं नईव ॥ मेव यावस्तु मविस्मे
कया पापरां लाहलो कधो नि उ ॥ माहदेव या कस्तु युया पापरां
रां धुसारा हुये कानईव ॥ स्वामिया त दोहया नाया पापरां सुत्पा
विस्मे नईव ॥ दाजु किजा काये वावः थि थिः ॥ ५१ वस्तु न काया

३५ पूर्वसहाग तचस येववरोधु व ससात्तस्मात्पु रस्त्रागशिनादिवारतिथि
स्तुतद्व कथितसदेव ॥४॥ स १००० ति द्युषविंशु १० तातो धः तवसिद्ध
२४० भागोनभवत् २०० शेषो तपंश्च ५० संयुक्त रूपाद्याग डि वत्रा
हृद १ भागाभ्यधि कशसाकः ॥५॥ रुद्रा ११ हं तोषे द ४ पुतात्रियेनः ४
संवचतोषिष्ट ६४ गुणा रदा ३२ द्युः पयकः तववा गा २०० पुतेरू केत्तु
धर्मा भागो हनवांसपुक्त २० ॥६॥ केत्ताभवद्या ११ यिषुनेत्र २२५ वज्रः ल

रान

भा०
२

विष्णोर्भक्त्या विष्णुं कृत्वा स्थात॥ पातसारपञ्चानगनेत्र २७ युक्तो त्रिनन्दन
सिषोगगनांग ६० निघ्न ॥ ७॥ द्विरिदुशमाश्रयावराभैर्न संसोद्व
द्यापुनरङ्गचैः १६ त्रिनन्द २३ नन्दशेषो यदी सुख्यैः स्थात खरा
महिनखखवेवारो ५४००॥ ८॥ देशान्तरादिक गणितं प्रसाधामि
तिह कल्याणैः समो ध्रुवा स्थात॥ अबन्ति देशा कुतोजे नानि संगु
रणवारो परमदभाजितानि ॥ ९॥ हिताधिकान्यां गेन खेच २०६ कुप्य

तरितागतिघ्रा

तच्छाया कुवेदै ४९ फलमंडुलानि॥ स्वदेसजाया विषुवत्प्रमा स्थात
पश्चैर्तु दृष्टा २६ दृष्ट्या ॥ सतेनम ९०० तं भवती हलधं देशान्तरां स्तिर्यंश
साङ्ग केनै ॥ १०॥ इति श्री सदानन्द चार्य्य विरविपञ्चमिष्टानैः सार
स्वतिकरणैः तिथिचक्राधिकारप्रथमः ॥ १॥ सास्त्रादि सौराहगुण
कलेर्वावेवर्षाधिपासप्र ७ हतावसेषाः शुक्रैर्नृवाचस्पति ३ स
प्यैः सौम्य पसनैः शरारा ३ अमसो भवन्ति ॥ १॥ साकोनैर्दिन्दुक्रिसान

रास

५०

२

पुत्र ३१२ कलिगत ० तद्दृगणस्तु वृत्तः व्ययन भो ४२०० लो वन
 वेद हिनसास्त्रादि पिंड कृषित स एव ॥ २॥ अद्योर्क १२ निघ्नो
 रविमास १२ युक्तो सप्ताव १ सप्ताव विमासनाथ ॥ ज १ शुक्र २ सूर्य
 ३ ~~पृथ्वी~~ ४ सुरेज्य ५ सौरि ६ चंद्रा ७ क्रमात्सावनमासतो न्य ॥
 ८ ॥ ये वै त्रुलि प्रतिपद्युवा स्य वारस्त वर्षा धिपतिप्रविष्ट ॥
 ९ ॥ यो मेव संक्रांतिदिने स मां त्रिसप्ताधिपो कर्कट संक्र स स्यात् ॥ ४ ॥ स

का हो मुणितो ॥ मो ३ भूमि शो सतिना हृत्तर व्यादि क्रमतो राजा मत्रित स्य च
 तृथ के ॥ ५ ॥ साकं वै दै अ ४ गुण संपुक्त व सु ८ मिभागा माहरे तं अनन्तारि
 क्रमेनैव अष्टौ नागा प्रकिर्तिता ॥ ६ ॥ अत्रो वा सुकि २ पद्यो ३ साहापद्य ४
 अतश्च क ५ कुलि ६ कर्कट ७ संपो ८ अष्टौ नागा प्रकिर्तिता ॥ ७ ॥ साकं
 ससाक १ संपुक्तो मुनिभिर्भाग माहरे ॥ आवाहादि क्रमेनैव सप्तवाता प्रकिर्ति
 ता ॥ ८ ॥ आवह १ अवहे २ वसंभव ३ विभवस्तथा ४ उद्धतौ ५ निवहो ६ वायु ७

रा स

भ०
४

सप्तवायुप्रकिर्तिता ॥ ९ ॥ साकसंसाक संसाध्यवेदे नैव वीसेषतमः आवर्तः ॥
द्विसंवर्तः पुष्करो ३ दोण ४ संबुद्ध ॥ १० ॥ युगमोजैगो २ मोनि १२ गते संसाके रवि
र्यदा कर्कटकं प्रजातिर्जलसताहं १०० हरिकार्मुकैर्दे ५० युक्तं
हिकर्माभिगयो १० सिति ८० ॥ ११ ॥ कूलि रकुं भा ११ लिटु तुला ७ गते दौ
ब्रजे इविषद्वनवति ६६ हानिम् ॥ १२ ॥ समुदेदस १० गुच्युषद्व
गुण्यैव पर्वते ॥ पृथिव्या मचतूरो ४ गुण्य भागाश्चैव तु विसति ८०

॥ १३ ॥ गुणे न ३ गुणितं शाकं सप्रभि ७ भागमाहरेत् संप्रमं २ हतक
न्याप्यैतत्रैव योजयेत् ॥ १४ ॥ यथा साकस्त्रिधा लब्धो यस्य स पर्व संप
वर्षा धान्या त्रिनश्ये वसिते रोद्रसमिरणः प्रजाताश्च तथा हृदि ह्येष १ स
मपविग्रह ॥ १५ ॥ सतेन वसमाप्याता स के साकाद्वतो मुहुः ॥ ॥ साको
कोवेदे शु ४ गुणिते पर्वते ७ भागमाहरेत् ॥ द्विगुणं हर्षं संज्यो ज्य
हुधाद्या क्रमसा भवेत् ॥ ॥ रुधातुषा तथा निद्रा आलस्यो दाम

मा ४
५

पञ्चकं शान्ति क्रोधाद्व्यालो उक्ता ह श्रुतया दसा निरसोगोरश्चै
वेणुपुण्य वतूदंश ॥ ॥ अहप्य वेसगुणं १० सरागगमाक
ल २५ छेडियं च ५ ज्ञयुक्त ॥ तत्पट्टि ६० सैष हि पुमियुगादिन
द्या निसेषानिरसमास्तु ॥ ॥ अहं वि सगुने देया पंचवंद पुला
चना २५ ५ भास्यति कारने ज्ञोक्ता संमिता मिहिरो यदि ॥ ॥ प्रभ
वावी भव १७ ला १७ मोदा ४ प्रजापति ५ अंगिरा ६ श्रीमुख ७

भाव द्युवा ८ धाता १० ईश्वर एव ह धान्या १२ प्रमाधि १३ विक्रम
१४ वृष १५ वित्रा भानु १६ रस्मा सुमानु १७ ताराणा १८ पार्थिव १९ व्याय
२० सर्वजित २१ सर्वधारि रथ विरोधि २२ विष्णु २४ खर २५ नन्दन एत
२६ विजया २७ जय २८ मन्मथ २९ दूर्मुष ३० हेमलं वि ३१ विलं चि
३२ विकारि ३३ सार्वरि ३४ स्रवग ३५ शुभकृत् ३६ सोभनकृत् ३७ पराक्रो
धि ३८ विश्वावसु ३९ पराभव ४० स्रवगक ४१ किलक ४२

भा०
६

किलक ४२ सौम्य ४३ साधारण ४४ विरोधि ४५ परिग्रामि ४६ प्रमाधि
 ४७ आनन्द ४८ राक्षस ४९ नल ५० कलपुत्र ५१ सिद्धार्थ ५२ रौद्र ५३ दु
 र्भर्ति ५४ दुदुभी ५५ रुधिरौगारि ५६ रक्ताक्ष ५७ क्रोध ५८ क्षयकृते ६०
 इति षष्टि संस्वत्स रनाम ॥ अथ ग्रह भुवा माहा ॥ सा आदि पिणव
 सुवहिरपड ६३ दद्याः ससितरसि २१ ज्वलनो महिजः सता १० हत
 द्वादसता १२०० सचक्रैः सषोडशिवारणैः ५४ युतो दृष्ट द्यात् ॥ ॥ जौ

चंखरवास्त्रि २०० अमद्यो १० दस घ्रातिथिदुःपलब्धां दुःरसास्त्रि
 २६६ हिन ॥ सता १०० हतो धावनवाप्त ९० नेत्रशूयाब्ज १२ यजिवोद
 नखास २० युक्त ॥ ॥ विषुखा २५० रघो कसरग्नियु ३५ ९८ सितो चम एम
 वं कुन्तपै ६१ सत १०० घ्राता १५ वेद ४० निघ्नो विनवे पु ५८ ४ युक्त
 सनिदस १० घ्रासहितरवशकै १४० ॥ ॥ भौमा ह्यग्निरसा ६३ द्यलै कर
 सहिता जवाहुनागे दृव १८२ सशग्निर ३२ प्रयुता गुरो ससिदि सौ १००

भा०

७

नक्षत्रान्वितो वैकुण्ठो वा शुक्रो वा मसरा इत्यौ ७५० मुनिगुरौ ३७ सौरेखवेदा
४० पलैलोका द्वि ४३ खनवा द्वय २८० जिन २४ युताराहौ गते वत्सरे
॥ रेवधुवसोध्यकूपश्च वागौ १५५ चं ज्ञेयता वा मकून २९१०३०
षाग्नि ॥ नक्षत्रादिषट् ७७ द्वा द्व ११ युता चके वा मां कपक्ष २८० युगने
२४ त्रौपा ता ॥ सप्तानेखा २०१ अद्वितत्ता वहिना ख सप्तन द्वा २७०
द्यन १० मध्य युक्ता ये च क्रमेनैव तु सं प्रसाध्य वर्षे प्र वर्षेषु भवन्ति

तारा ॥ इति ग्रह क्रवाधिकार द्वितीयः ॥ त्रिं स ३० द्वा एण मेष मुषा र्क मा
सादिनै समेता दितु वा सरेण द्वि वृत्तं सैतं नग भक्त शेष वारा भवं च ग्रह
मुषा धिनाथ ॥ चक्राश्चि २ वहि ३ युग भूत पा मा द्वा ७ तर्क षड् द्वा एण ५ एन
भूत प्रविषय ५ शुयथा क्रमेण ॥ मेषा दि रासि पुरुष रा सगुरो पुद्गल भू
क्तौ सकैश्च सहितं भवति द्यु ह द्वा ॥ २ ॥ सूर्य चर द्वा ति यथ प्रदे
या पृथक् सता १०० ~~नक्षत्र~~ क्रम सा शुषण सेषा शुभ क्रो न्वित भोग्य

स्फुटस्यात्

भा०

८

निघ्नसताप्रयुक्तोऽधिकसंस्तुतः॥ सूर्यस्यपंचांगेकदशवे१२इ१४
भूषा१६घना१७नवेष्टु१८कुपसा२०जिनश्च२४सप्ताश्वि२७नाचत्रगुणा
३१सामि३६दोर्विद्युताना४८अद्रिसरा५७संगंगा६५पञ्चद्वयो
वेदगजा८४कृतांश्च९४खिपेष्ट१०३बोभानुभूवो११२कूँसूर्या१२९
अष्टाश्विच१२८सरासच३५चत्राबिच३५१४९सरवजि
नश्च१४५सुकेनंदिगुणंकृत्वा दहो जन्मकालिके सूर्योदयादि

घटिकाविलिखेचवषापुनः॥ श्रोत्रमागेस्फुटं कूर्यात्प्रहासात्का
लिकोभवेत्॥ भोग्य इवे सप्तगुणा सता प्रा१०० सप्ता७निता स्यात्सु
तसूर्यभक्ति॥ ६॥ खन ८०८ निघ्नानि ययससां के के ज्ञे सत घ्नी १०० राम
ति यय अदेयाः के ज्ञा क्रमा षट् सरा सप्त दोमै २७५६ सो ध्यो वि धौ श्वा
ग सरा वि दोमै २४५७॥ ७॥ इन्द्रु हृद्वा ताहि सप्त सूर्ये १२० वराह
भागानपुन समर्द्धा वराह भागा विषुवादिमासैखं च न्नैत्रै ह यचं

भा० दुष्सासा॥ या पुनश्च वृत्तागगने पुलकं मितो सुवेत्तेषु युतं प्रकुर्यात्
 ८ तस्य च हस्यु सतसाश्च १००० वाता भोगो भवंसाश्च धनं स्फुट स्यात् ॥
 ॥ ८ ॥ इन्द्रोष ० रुपा १ मि ३ सा ६ ष च त्वा १० न पा १ जिना २४ रुद्र
 पंचयुगा ३ भसा ६ ४ ६ षटि ६० सगा ७ ५ कनवा २१ अष्ट काठा १०
 षट् भानवो १२६ रामनु १४३ नवा है १५० पश्चात् मुदा
 वा के भूवो १०० हिषाश्चि २० विश्वाश्चि १३ जात्याश्चि २२३

रामदशै २३० पंचाग्निद्व क २३५ गोपि यमा २३८ कुसिद्धा २४१ नेत्रा
 छिद्व क २४२ वति जिना २४३ त्रिसिद्धा २४३ ॥ ११ ॥ भूति न वै २० त्रं
 नित भोग्यमिन्द्रो रक्षी न च त्वाति ययष न द्वे २० सेषो न षां का २० गगनं राम
 ॥ १२ ॥ निघ्न भूतिं त्ररात्रा घटिका भवति ॥ १२ ॥ सता प्र १०० पृथ्वी सतसा धिता
 का १०० अष्टा ६० रुता भुक्तिरुता प्रनाडा ॥ रामि ससा का स राजाति २२५ ल
 च नक्षत्र वत्त घटिका श्यसेषा ॥ एव विद्वा युतिता ययोगा स प्राचि

ताश्च दुर्गतिस्तु फाराग्न्यर्को न च द्वाश्च सराश्चोपरि हि ना॥ १४॥ ततो
 वसिष्ठश्च सराश्चोपरि हि ना॥ १५॥ पश्चिमं संप्रावसे मकरां ववाद्ये तनादिका
 द्यातिथि वद्वति॥ १६॥ परे दले कस्मिन् चतुर्दसि च तिथिर्ध भोगा
 सकृन्निश्चतुष्पातना गैस्त्वकिंस्तु घृमिति क्रमेण चत्वारि विंशति
 ररागानि मित्रं॥ १७॥ दिने दिने हर्गारा रूपं युक्तं संप्रवृत्तं सु
 र्येति स्वनंदं १०० मिंदोः खरे वंदु १०० केद्रेषु युते प्रकृयात् प्राग

वत्सफुटि कृत्यमिति प्रसाध्या॥ १८॥ तिथि वृद्धि युतं षट् ३६ त्रयोद
 स ॥ ३६ नैसम ॥ षट्तिने पंच तिने मासा ३६ सप्तमं वजेत॥ १९॥ सा पंध
 द्युक्तं नक्षत्रं सप्तमाप्यक्षं संध्या ॥ २०॥ हीने ३६ षट्त्रिंशति तिने त्रिंशदश एत
 त ॥ २१॥ प्रशान्तेयत् ॥ २२॥ ज्योतिर्वृद्धि १२ युते दिना ३६ सप्तमं वजेत॥
 तिने द्वादशं योज्य १२ दिने त्रिंशति मिमंसा ॥ २३॥ तिथि नक्षत्र योगाश्च
 वृद्धि पंचमासो हि भिरक्रमेणैव तु हियन्ते ॥ सध्वेद ४ गजेदक्रमा मासा

१२ भा
इत श्री सत्तानन्द चार्ये पञ्चसिद्धांते सारे भास्वतिकर शेष चागतिथि
नक्षत्र योग करणाधिकार त्रितिय ॥ वेदाकसूर्य्यो १२६४ इत स
काद स १० घ्रादिस्थानि वेदेन्दु १४३ हता प्रायुर्त्तनागे र हता प्रिन
ग १ से अित च दकुस्य सैक्राति कुवस्ये केषु ॥ १ ॥ अस्विनी अंग सुना
च ६ ॥ भरणी पंचषष्ठ ५ ॥ ५० कृतिका पंच अक्षुषि ५ ॥ २८ वषट्
डागा वानयो ५ ॥ ५१ रोहिणी पंच चैत्यादि ५ ॥ २९ मृगशिरा वतुत कुवम्

५ ॥ २५ मिथु रो वानरामादि ५ ॥ २३ रोहिणी पंच जिनास्मता ५ ॥ २४ अदि
ते वाननक्षत्र ५ ॥ २७ कर्कट पक्षमेकयो २ ॥ १७ गुरु भेन्द्रिय पाग्नि च
५ ॥ ३० सार्य्य पंच ससि गुरा ५ ॥ ३१ सिंहेन्द्रिय अर्षिकादि ५ ॥ ३२ भगे रान
वानाचमूर्द्धना ५ ॥ ३१ अर्ष्यमे वान भुतेत ५ ॥ ५ कन्यामेकातनेत्रयो १ ॥ २६
हस्ते युगदिवेदाच ४ ॥ ४२ चित्राकृत तिथि सथा ४ ॥ १५ तुले रामायु
गे पंच ३ ॥ ५४ स्वातिरामाष्ट विसति ३ ॥ २८ विसाधादियुगा पंच २ ॥ ५६

१ भा०

किं दृष्टि यसा कृतपा ४५ अनुरा द्या यसा पंच २५ ज्येष्ठा मेका गि
रुद्रव ११३ धने सुन्य न्या श्वेव ०१६ पूर्वाषाढा रसा क भू ६१६
उत्तरावाण मेषादि पा २१ मकर भुरसा गुणा १३६ श्रवण यु ग
सिधाव ४१२४ धृष्टा मषा ग्निय ३३० कुंभे ततिय वज्राव ३११ को स
रुणा क्षिन वा ग्निच २३२ पूर्वा ससि गुना वाना १५३ मिने यूग ससि
मरा ४१५१ उत्तरा चतुर्विंश ११३ रेवति षष्ठ वेद यो ०४० कु वकं

सा कल खंच वार दरा यथा क्रमा श्रुति श्रोत्रा षंडेन संक्रान्ति
गनन पाठा ॥ वानखि ४१ परितु वेद ४६ सप्त उदधि ४७ सप्ताधि
४७ अङ्गुः खये ४६ वागा वेद ४५ चतु यूगा ४४ सिधिकृते ४३ वहिकृ
तो ४३ द्विकृते ४२ आदि ४३ वेद यूगा ४४ समास कथितो वैत्रा
परोपक्षगः एवं द्वाद समास मिश्र कथितो सर्व स्फुट रुक्रमात्ता
वृषा दृगा हृषु २५७ षडा कृति यू ६१२२ कर्किय माहे २५८ हरि गत

राम

उभा०

सो द्वा २५ त्रि ह क भ २१ २२ मा वि द्वि स रा ४। ५२ द ति ष ड अ वि ६ ७
 धनु कुं भे धा ११ १२ मं द गा णा मि २३ २४ घ ट कृ ता र्थ १४। ५ मि न स
 रा गे ८०। ५। ५७ च वा र ह ए ८ वृ ष भ स्यां व रे व हि ३० मि पु ने दू र स
 त्र या ६० त्रि न द्वा क र्क टे पो क्ता २३ मि हे व त्ता रि भा न वा १२४ यू व
 ति य च भु ने तु १५ प तु ले र सा द्वा ३ वृ व १८ ध्वा लि भू प त ये ने त्र
 २१६ ध न पं वा वि ने त्र यो २४५ म को प न स ३० धि २१५ कुं भे वे द

ष व ह य ३० ४ मि ने वे द मि रा मे तु ३३४ मे षे यू ग र सा ग न य ३६४
 अ प भौ मा दि ग्र ह स्फू टि का रां ॥ भौ मा श्व २७ द्वा द्यु गु ना कृ ता
 ४ पु द्यु हं द्रा त्रि स ३०० ता प्त्र ही न ॥ अ णा ह ८८ शेषो ख ख रा म नि
 ३०० द्वा प क्ता क्षि २१ मि सो म सु त स्य मि द्यं ॥ गू र्गु न ३ द्वा दि गु णा द
 रा १० प्रं वे द ४४ वि भि ल ख वि व र्जी ता च ॥ वे द ह ता ४ ध गु णा भ
 १५ कृ ति त स्य मि प्रं स हि त स १४० स कै ॥ ॥ अ नि द्यु हं द्रा ८ न व

र म

१४ भा० अत्र दंडं धृष्ट्या वृद्धयस्तमया भवन्ति जीवार्कजभूमिपुत्राजभागवोसि
 धृतिभवेताम् ॥ दिग्धातु १० घनोक्त ११ नात्यपकषर्णं गं सहित
 विभिन्निगुणैर्किं कुञ्जे सिद्धं ॥ ॥ अष्टे ८०० पुप ५०० खट्व ६०० नद्व ८०० चतु
 ४०० सता ह्यं ॥ पृथग्रहा उगतेष्वेकाहदा ११ नवेन्दु १८ द्वियमा २२ नवे
 द्यु १८ हदा ११ श्रमोणो भवत्तदीना ॥ घना १७ ग ७ नाग ८ त्रय ३ सप्य १२
 निद्या दसा १० ध्यातिन धन च प्रथो ॥ यदां तपडेगुणा कशये वसो ध्यो

फलविक्रमखण्डवचसुत्तेतु रं गेऽप्रथमो नखरातस्माद्यदा प्रतुफ
 लं न देव ॥ ॥ ग्रहश्च शिष्टान्वितको यदा स्याद्विगां धनं वा सरागिसंख्या
 रासिविनाङ्का वि३ गुणं अकुर्यात्तदा ततसि द्रु फलमप्रसाध्यं ॥ ॥ एम
 भोमस्य पात्रि ४० नग सप्त ७७ वेसा ११० देवेन्दु १३३ नात्येन्दु १२ अग
 ८७ गोनगार्था ५७ जस्य क्ष २७ सन्निषु ५३ कुसप्त ७१ षट्सवा ७६ त्रिपञ्च ५३
 सप्ताभि ३७ नवेन्दु १८ स्मृताः ॥ गुरो नृपा १६ पाणि ३० गजत्रयश्च ३८० ह

१५ भा वृहयो ३६ राम यमा २३ नृपा १६ द्वा ॥ धाम मो द्विवेदा ४२ कू ग जा न ख
 सूर्या १२० वो माह १५० नागेन्द्र ४८ भ भू १२३ त्रि शैला ७३॥ शानि
 दिसो १० हा १७ कु यमा २१ न वे नु १८ दि भू भये २२ म दू ल ट म वि यो ४
 इति ग्र ह ख ए दा ॥ भा दि फल ४ घ्रा क यी तो ग्र हा स्या त रा स्या दि कै ८ गु
 णि तं क्रि ता न्न ४ भा दि भ वे द् भा दि पु णि हार स रा कृ ति रा सि २५ मु
 खि सत ३ १०० वि श्वो श्चि २१ श्व ७ द शो १० ग मा सै द च का र्द ६००

केन्द्रादिति ज्ञाति गुणं ॥ कुन नृ रा मा ३८ रा मा प ७ ख र वा श्वि २००
 स प्रां क प क्षा २८ न व र भू चं द्रे १८० भा मा दि वि टा क्र म सो के यु
 क्ता यु त्त त स्या क्र म सो र्द ६०० च चं ॥ ॥ षड्व ह यो ३६ द्वा द स रा सि रा स
 भा र्थो ५७ वे दा श्वि ना २४ स प्रां मा ६७ क्र मे ण ॥ स्व ति घ के त्र स्य तु म ए ल
 दे म ६०० पू र्वो प रा व क्र ग वा स रा स्य ॥ १५ ॥ ष ह्या दि भू यो १६ द्वा गु णा ३८
 बु द श्रा २१ च क्रो दि तं घा पे रा तो ॥ स ग स्या त् ॥ ॥ एवं ज भ वो र्व ८

१५भा०

पंचपषडा६०० प्रागोनषटापसोधि को को ॥ पलप्रभातत्र २२ हताप
खाङ्गा २०० युक्तास्फुटा केन समा यदा स्यात् ॥ याम्पातदि स्याद्युदयो
निशात्रे सुनेरगलस्य सुगारि हनु ॥ ॥ युहद्वमष्टा हततत्रदिमभि १० ल
खंडं कुवंयूक्दलितं तु चक्रा २०० संसोधयते ॥ हरविप्रतिपान्नक्षणे
रासि यतश्चतुहत् ॥ ॥ पातक्षुवाजं २ दिगुणा कर्तव्या दश १० युक्तं
भागन नयेतु २०० ॥ गुरु सदा वक्र गति स्फुट स्यात् ॥ भादिसुवक्रा

१४
द्वारप० युतस्य पूरुषा ॥ युगे दुसर्थो दिनमेकचक्रा भौमोषपुगं २० बुध
नक्षत्रोवा २० षष्टिवद०० मंत्रिशिवशु ११ अक्रोरवरेवदु १० ॥ सारिदि
सिषार्थरातु २५ पक्षत्रयति हतिलोहित च विसे २० बुधौ देवगरो च वधि
१ पंचाशिका विं सतिभिश्च २५ अक्रो द्विवर्ष मौरि समास सष्या ॥ ये को न
वि स्या १२ नवमा सत्या रासि स्थिता रातु मुनि स्वदूयात् ॥ ॥ अथ भौम
दिग्रशाना भूति कर्म मा ह ॥ रिदि च संसदि भागले खषष्टि ६० हतैव

राम

१६ भा

पलं च ज्येष्ठा भौ मदिषेदाग्रत भूक्ति मागमाधिकस्य यसंग्रह पूर्ण
 सधः ॥ १ ॥ वेष्टरावतवती ५०० ॥ खमिद्वोके के सत १००० ॥ भूतसमः ख
 सिद्धो ० ॥ २४ ॥ भूपंच ४ ॥ ४ पंगम ३ ॥ १७ घनो ० ॥ १७ खमेघो ३ ॥ १७ व्याघोप
 मियोरसपू ० ॥ ७ वनिजाति भूक्ति ॥ त्रयो घना ३ ॥ १७ विश्व ३ ॥ ३३ नलो व
 त्रयो घनापञ्चपा २० ॥ नखागुणा दो ३ ॥ १७ ॥ ६ ॥ घनागता गदत्रि १ ॥ विष्ट
 भूक्ति भोग्या हता या स्वसते १००० ॥ नूनं उनेतुषडे सहितो न्यर्थे

मनुस्फुटा भूक्तिरियं कृतादे ॥ ॥ मनुस्फु सि घुगतौ विशोधा प्रा
 ज्वत कृता भोग्य हता सता १०० ॥ प्रावतुल्य भोग्या समुत्तं फुटा
 स्यात् वक्राति चो विपरित सोध्या ॥ भध्रुवैके त्रस्या तसि घुके
 त्रस्फुटग्र हाध्रुवसि घातं कूर्या रिणं शिद्धि धिके पुनः ॥ ॥ ग्रहे व
 क्रगते मार्गि माते चक्रार्द्ध केतया ॥ अलो दये धन रिन स्या वस्त्रिय
 पूर्ण चक्र के ॥ ॥ भगुज अर्द्ध चक्रोपस्थाद स्र विनिदि शतः स

राम

१७ भासमचक्रेतपोपूर्वविपरितेनुर्दरीनम॥ पश्चादस्त्रंसमायातिगुह्यमोम
सनेह्याउदयनिसदाप्रोच्योबुधश्चैतुवक्रतामिनमेषगतच
सततंदक्षिणोन्नतश्रुत्येवोत्राश्रीगस्यसमंतदृषसिंघयो॥ ॥
इति श्रीसदानदाचार्यपंचसिंघोत्रेसारेभास्वतिकर्णेग्रहस्फुटिका
रचतर्था॥ रुपाक्षिवेदेतिहासकृत्वाद्याविविसोधयेकुचनमोग
एमै३६०० स्वल्पात्स्वकियार्थयुतादि२भक्ता१०० कृतेन१लेद्या

यनांसकास्पू॥ १॥ दुष्टदृष्टागाष्टकुभिर्गजामाद१ बुद्धैस्वलोका
तैष्योन्नतरदक्षिणोत्तु॥ ततषण्मां३० क्रमसश्चदद्यात्तसाद्ध४५सप
हं३५ चदलं चराद्ध॥ २॥ पलप्रभा१७ घंसरषट्पमात्र२५५ वेद एत
त१५ ज्ञा ज्यमनचगोलात्॥ अहर्देलं व्यसमतो निसाद्धं तयोग
तष्यात्तरतरत्नं न तंच॥ षड्दृष्टवराद्धं पथक्षकदसा१० प्रसाभा
प्रमाहीनं॥ याम्याहिरामासयुतंदशापू१० तदक्षिनादिपु